आमुख

वेद विश्व वाङ्.मय के प्राचीनतम ग्रन्थ है। भारतीय संस्कृति के मूल आधार स्तम्भ ये वेद ही है। ये भारतीय संस्कृति, सदाचार, ज्ञान-विज्ञान एवं नैतिक उच्च आदर्शों के अक्षय निधि है। सभी स्मृतियों, पुराणों, इतिहास एवम् अन्य शास्त्रों के लिए वेद अन्तिम प्रमाण है। वेद भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति के मूल स्रोत है। वेद संख्या में चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। इन वेदों के अनन्तर ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् तथा छः वेदाङ्ग भी वैदिक साहित्य के अन्तर्गत परिगणित किये जाते है। इन वेदांगों की सहायता के विना वेदों के अर्थ का ज्ञान अत्यन्त कठिन है। वेदांगों के अन्तर्गत शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष है। वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण ज्ञान हेतु शिक्षाग्रन्थ, कर्मकाण्ड एवं यज्ञ प्रयोगार्थ कल्प सूत्र, पदों के प्रकृति प्रत्यय रूप बोध के लिए व्याकरणशास्त्र, वेदार्थ के सम्यक् ज्ञान हेतु निरूक्तशास्त्र, मन्त्रों के उच्चारण, लय व अक्षर संख्यापरिज्ञान हेतु छन्दशास्त्र तथा यज्ञानुष्ठान विषयक समय के सम्यक् ज्ञानार्थ ज्योतिषशास्त्र का उपयोग होता है।

इन छः वेदांगों में कल्पसूत्रों का अपना विशिष्ट स्थान है। कल्प सूत्र विशुद्ध रूप से कर्मकाण्ड के परिचायक है। इनमें मानव कल्याण से सम्बन्धित यज्ञ-यागादि तथा विवाहोपनयनादि संस्कारों का क्रमबद्ध वर्णन करने वाले सूत्र ग्रन्थों का समावेश किया गया है। कल्प सूत्रों का श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्व सूत्र के रूप में चतुर्विध विभाजन मिलता है। श्रौतसूत्रों में श्रौतकर्मो का विधान है, गृह्यसूत्रों में गृह्याग्नि में सम्पाद्यमान पाक यज्ञों एवं संस्कारों का वर्णन है, धर्म सूत्रों में वर्णाश्रम धर्म एवं उनके कर्त्तव्यों का मुख्यतया वर्णन है तथा शुल्व सूत्रों में वेदि-निर्माण आदि की विधि का वर्णन मिलता है। धर्म सूत्रों में धर्म एवं उसके उपादानों का विशिष्ट वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त धर्मसूत्रों में चारों वर्णो के कर्त्तव्य, चारों आश्रमों के आचार, विविध यज्ञ, संस्कार, पाप एवम् उनके प्रायश्चित्त, व्रत, आशौच एवं शुद्धि, ऋण एवं व्याज, साक्षी, अपराध, दण्डप्रक्रिया, राजा के कर्त्तव्य, स्त्री आचारसंहिता, सम्पत्ति विभाजनादि का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त पंचमहायज्ञों का भी विस्तृत वर्णन धर्म सूत्रों में यत्र-तत्र मिलता है।

इन्हीं धर्मसूत्रों के आधार पर कालान्तर में स्मृतियों की रचना हुई। ये स्मृतिग्रन्थ सामाजिक जीवन की रोचक झांकी प्रस्तुत करती हैं। आचार, व्यवहार एवं प्रायश्चित्त का विस्तृत विवरण इन स्मृति ग्रन्थों में देखा जा सकता है। स्मृतियों को ही धर्मशास्त्र के नामान्तर से अभिहित किया गया है।सामाजिक दृष्टि से इन स्मृतियों का सर्वाधिक महत्त्व है। स्मृतिग्रन्थों में मनुस्मृति को प्राय: सभी विद्वानों ने सर्व प्राचीन माना है, क्योंकि इसमें मानव-जीवन और समाज से सम्बन्धित छोटी से छोटी बातों का भी अत्यन्त सुव्यवस्थित एवं स्पष्ट विवेचन मिलता है। मनुस्मृति के अनंतर विषय-विवेचन में सुसम्बद्धता और प्रतिपादन शैली की मौलिकता की दृष्टि से विष्णुस्मृति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। विष्णुस्मृति के वर्ण्य-विषय को प्रधानत: तीन रूपों में विभक्त किया गया है- आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त। आचार के अन्तर्गत वर्णाश्रम धर्म का समावेश किया गया है। इसी के अन्तर्गत संस्कारों का भी वर्णन आता है। राजा की दिनचर्या, राजा के कर्त्तव्य, दण्डविधान आदि का वर्णन आचार के अन्तर्गत प्राप्त होता है। व्यवहार के अन्तर्गत विधि नियमों का स्वरूप वर्णित है। प्रायश्चित्त के अन्तर्गत पाप-निवृत्ति हेतु किये जाने वाले जप, व्रत, तप आदि का उल्लेख है। विष्णुस्मृति प्रधानतया गृहस्थोचित कर्त्तव्यों पर केन्द्रित है। एतदर्थ इस स्मृति का अध्ययन वर्तमान युग में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

धर्मशास्त्रों के प्रति विशेष अभिरूचि होने के कारण मेरे शोध-निर्देशक श्रद्धेय गुरूवर डॉ० वीरेन्द्र कुमार मिश्र जी ने **'विष्णुस्मृति : एक अध्ययन'** विषय पर शोध कार्य करने का मुझे परामर्श दिया। मैंने टीका-प्रटीका युक्त विष्णुस्मृति को आद्योपान्त अनेकधा पढ़ा एवं उसका मनन-चिन्तन किया। तदनन्तर शोधकार्य हेतु श्रद्धेय गुरूवर का अनुमोदन एवं शुभाशीष प्राप्त हुआ। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध गुरू जी की सतत प्रेरणा का ही परिणाम है।

सुविधा की दृष्टि से इस शोध-प्रबन्ध को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में धर्मसूत्र एवं स्मृतियों का सामान्य परिचय दिया गया है। स्मृतियों की संख्या, उनका प्रतिपाद्य, कालनिर्धारण की चर्चा की गई है। विष्णुस्मृति का प्रपिपाद्य एवं धर्म विषयक अवधारणा का विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में ब्राह्मणवर्णधर्म, क्षत्रियवर्णधर्म, वैश्यवर्णधर्म तथा शूद्रवर्ण धर्म का विवेचन किया गया है। इसी अध्याय में ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम की विवेचना विस्तार से की गई है।

तृतीय अध्याय में संस्कारों की उपयोगिता, संस्कारों की संख्या तथा विष्णुस्मृति में प्रतिपादित संस्कारों का वर्णन है।

चतुर्थ अध्याय में आह्निक कर्मो का विस्तृत विवेचन किया गया है। आह्निक कर्मो के अन्तर्गत शौचाचार, दन्तधावन, आचमन, धनार्जन, स्नान, तर्पण, विष्णुपूजन, पंचमहायज्ञ भोजन, स्त्रीसंग, शयनादि की स्मृति-अनुरूप चर्चा की गई है।

पंचम अध्याय में पातकों का विवेचन, अतिपातक, महापातक, अनुपातक, उपपातक, जाति भ्रंश कर, संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलावह पातकों तथा प्रकीर्ण पातकों एवं तदर्थ किये जाने वाले प्रायश्चित्तों का वर्णन है। प्रायश्चित्त न करने पर नरकों की प्राप्ति का उल्लेख तथा उन पापियों का पक्ष्यादि योनियों में जन्म का उल्लेख है इसी अध्याय के अन्त में पाप-निवृत्यर्थ किये जाने वाले प्रायश्चित्तों की प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में राजा एवं राजतन्त्र की व्याख्या की गई है। राज्य व्यवस्था हेतु योग्य अधिकारियों की नियुक्ति प्रक्रिया, राजधर्म की सात प्रकृतियां एवं नीतियां, कर-व्यवस्था, विभिन्न अपराधों के लिए दण्ड व्यवस्था तथा साक्ष्य सिद्धि का विवेचन विस्तारपूर्वक किया गया है। इसी अध्याय के अन्त में धटादि दिव्य प्रमाणों की भी चर्चा की गई है।

सप्तम अध्याय में श्राद्ध, श्राद्ध का महत्त्व, श्राद्ध की विधि, अष्टकाश्राद्ध, श्राद्धीयदेवता, नित्य नैमित्तिक तथा काम्यश्राद्ध, श्राद्ध हेतु प्रशस्ताप्रशस्त उपकरण, श्राद्ध हेतु प्रशस्ताप्रशस्त ब्राह्मण तथा श्राद्ध हेतु प्रशस्ताप्रशस्त स्थानों की चर्चा की गई है। इसी अध्याय के अन्तर्गत एकोद्दिष्ट श्राद्ध तथा वृषोत्सर्ग का भी विवेचन किया गया है। श्राद्ध करने की फलश्रुति यहां विस्तारपूर्वक वर्णित है।

अष्टम अध्याय में विविध विषयों का विवेचन है। जो विषय पूर्वोक्त अध्यायों में समाहित नहीं हो सके उनका पृथक्-पृथक् वर्णन यहां किया गया है। पुत्रधर्म एवं उनके दायभाग, धनगणना प्रकार, कालगणना प्रकार, आशौच एवं शुद्धि-निरूपण, आचार्य एवम् अध्ययनोपक्रमादि, त्रिविधधन, यात्राकालिक नियमोपनियम, दान-प्रक्रिया, मनुष्यशरीर का वर्णन एवं ध्यान विधि की चर्चा इस अध्याय में की गई है।

नवम अध्याय में विष्णुस्मृति की समाजोपयोगिता एवं समसामयिकता पर चर्चा की गई है। अन्त में प्रकृत शोध-प्रबन्ध का उपसंहार कर सन्दर्भग्रन्थों की सूची का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध की पूर्णता के लिए सर्वप्रथम में अपने शोध-निर्देशक परम श्रद्धेय गुरूवर डॉ० वीरेन्द्र कुमार मिश्र, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष संस्कृत-विभाग, पूर्व अधिष्ठाता भाषा-संकाय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के प्रति हृदय से कृतज्ञ एवं चिर ऋणी हूँ। इन्हीं की सतत प्रेरणा एवं अमूल्य विद्वत्ता पूर्ण परामर्शोसे यह शोध-कार्य पूर्ण हो सका। इनके हृदयगत औदार्य, सौम्यस्वभाव, हृदयावर्जक अध्यापन शैली तथा कुशल निर्देशन के लिए मै श्रद्धावनत हूँ। इनके सत्परामर्श, स्नेह, अपनापन एवम् आशीर्वाद के बिना यह शोध-कार्य कठिन ही नहीं अपितु असम्भव था। अध्ययन-अध्यापन, लेखनादि कार्यो में व्यस्त रहने एवं अस्वस्थ होने पर भी इन्होंने सतत साहाय्य प्रदान कर के मुझे अनुगृहीत किया। शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा से लेकर शोध-कार्य की समाप्ति पर्यन्त इनके पांडित्यपूर्ण परामर्शो से मै लाभान्वित हुआ हूँ। आशा करता हूँ कि इनके विद्वत्तापूर्ण परामर्श भविष्य में भी मेरा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे।

इस सन्दर्भ में मै हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभागाध्यक्ष तथा अन्य विभागीय गुरूजनों के प्रति सहयोगार्थ कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ। संस्कृत विभाग के अधीक्षक आदरणीय डॉ० रवि पटियाल जी का भी मै समय-समय पर मिले सहयोग एवं परामर्श के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। प्रकृत शोध-कार्य की अन्तः प्रेरणादात्री स्वनामधन्या-नित्यलीलालीन-परम पूज्या जननी श्रीमती सरस्वती देवी के चरणारविन्दों में प्रणामांजलि प्रदान करता हूँ। पूज्या मातृ-कल्पा श्रीमती सीतादेवी एवं आयुर्वेदमनीषी परमपूज्य पितृवर श्री ठाकुर दास शर्मा के प्रति नतमस्तक हूँ जिन्होंने उच्च शिक्षा हेतु मुझे निरन्तर प्रोत्साहित किया। परिवार के अन्य सदस्यों, पूज्या भगिनी श्रीमती राधा शर्मा, धर्मपत्नी श्रीमती कविता शर्मा के समय-समय पर मिले सहयोग हेतु हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस शोध-कार्य को पूरा करने हेतु मुझे निरन्तर प्रोत्साहन दिया। अपने दोनों आत्मजों सिद्धार्थ शर्मा तथा सचिन शर्मा जो इस समय एम० आर० ए० डी० ए० वी० विद्यालय सोलन में नौवीं एवं आठवीं कक्षा में अध्ययनरत है, के वात्सल्य क्षणों को छीन कर यह कार्य पूरा हुआ। इन दोनों के प्रति भी इस शोध-कार्य की पूर्णता पर वात्सल्यपूर्ण कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

शोध-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण एवं दुष्प्राप्य पुस्तकों को उपलब्ध करवाने के लिए मै हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय तथा केन्द्रीय पुस्तकालय सोलन के ग्रन्थालयाध्यक्ष एवं कर्मचारियों का धन्यवाद करता हूँ। जिन अन्य विद्वानों की कृतियों का प्रत्यक्ष, परोक्ष रूप से सहयोग लेकर मैंने यह शोध कार्य सम्पन्न

किया है उन सभी विद्वानों को भी नामोल्लेख के विना प्रणामांजलि प्रदान करता हूँ।

अन्त में इस शोध प्रबन्ध के टंकण कार्य को मनोयोग एवं तत्परता पूर्वक करने के लिए मै श्री मनुसूद एवं रंजू ठाकुर का भी हृदय से आभाराभिव्यक्ति करता हूँ।

दिनांक....6.5.2013

शोधच्छात्र

जगदीश

जगदीशचन्द

संस्कृत-विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

शिमला-171005